दादा भगवान परिवार का

जनवरी २०२४

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बाल मित्रों,

जिस तरह टीचर्स डे, चिल्ड्रन्स डे, फ्रेन्डशिप डे मनाया जाता है, वैसे ही किसी दिन यदि 'नो एंगर डे' मनाया जाए तो? कितना मज़ा आएगा न! उस दिन, कोई हम पर गुस्सा न करे और हम किसी पर गुस्सा न करें।

अगर गुस्सा न करने में इतना मज़ा है तो फिर हम गुस्सा क्यों हो जाते हैं? चलो, इस अंक में दादाश्री की समझ, कहाँनियाँ और ऐक्टिविटिज़ के द्वारा गुस्से के कारणों को समझें। डिटेक्टिव टीम ने केस सॉल्व करते-करते गुस्से का कौनसा केस सॉल्व किया? सोफिया ने गुस्से में कैसी गलती की? सौर मंडल के ग्रहों को गुस्सा क्यों आया? छोटीसी बच्ची ने पूज्यश्री के साथ क्या बातें कीं?

इस अंक में हम इन सभी प्रश्नों के समाधान के तौर पर अपने गुस्से के कारणों को समझें और अगले अंक में गुस्से के उपाय समझेंगे।

- डिम्पल मेहता

गुस्सा क्यों आता है?

अक्रम एक्सप्रेस

वर्ष : ११ अंक : १०
अखंड क्रमांक : १३०
जनवरी २०२४

Editor: Dimple Mehta

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by and Published from
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School,
Chhtral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol
Dist. Gandhinagar – 382729.

संपर्कसूत्र
वालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

© 2024, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : मनुष्य को क्रोध आने का मुख्य कारण क्या हो सकता है?

दादाश्री : दिखाई देना बंद हो जाता है, इसलिए। मनुष्य दीवार से कब टकराता है? जब उसे दीवार दिखाई नहीं देती तब टकरा जाता है न? उसी तरह जब अंदर दिखाई देना बंद हो जाता है (कुछ समझ नहीं आता हो) तो मनुष्य से क्रोध हो जाता है। हाँ, आगे का रास्ता नहीं मिलता इसलिए क्रोध हो जाता है।

जब अपनी धारणा के अनुसार न हो, हमारी बात सामने वाला समझ न सके, डिफरेन्स ऑफ व्यू पॉइन्ट हो जाए, तब क्रोध हो जाता है। हम सही हों लेकिन अगर कोई हमें गलत ठहराए, तब कई बार क्रोध हो जाता है। लेकिन हम जो सही हैं, वह अपने व्यू पॉइन्ट से है न? सामने वाला भी खुद के व्यू पॉइन्ट से खुद को सही ही मानेगा न?

क्रोध करे तब यह समझना चाहिए कि यदि हम पर कोई क्रोध करे तो हमें अच्छा लगेगा या नहीं? हमें जो अच्छा लगे, वैसा ही वर्तन औरों के साथ करना चाहिए।

ये क्रोध और चिढ़ वगैरह सब कमज़ोरियाँ हैं, सिर्फ वीकनेस है। गरम होना क्या है? पहले खुद जलना और फिर सामने वाले को जला देना। जलन किसे पसंद है? कोई ऐसा कारण नहीं है कि जहाँ क्रोध करने की ज़रूरत पड़ती है।

यह तो नई ही बात है!

जिस पर क्रोध होता है, उसे दुःख होता है, तो फिर वह बैर बाँधता है। तब फिर अगले जन्म में वह फिर से मिलता है।

क्रोध तो कमज़ोरी है। जिसमें कमज़ोरी नहीं होती उसका प्रभाव पड़ता है! वह अगर यों ही, साधारण रूप से भी कहे न, तो भी सब उसकी बात मान जाते हैं।

क्रोध आने पर हाथ-पैर काँपते हैं, शरीर भी मना करता है कि यह हमें शोभा नहीं देता।

घर में पहला नंबर किसको मिलता है? जो चिढ़ता नहीं उसको। उदाहरण के तौर पर : यदि घर में मम्मी किसी पर क्रोध नहीं करती हों, तो वे सभी को सबसे अधिक प्रिय होती हैं।

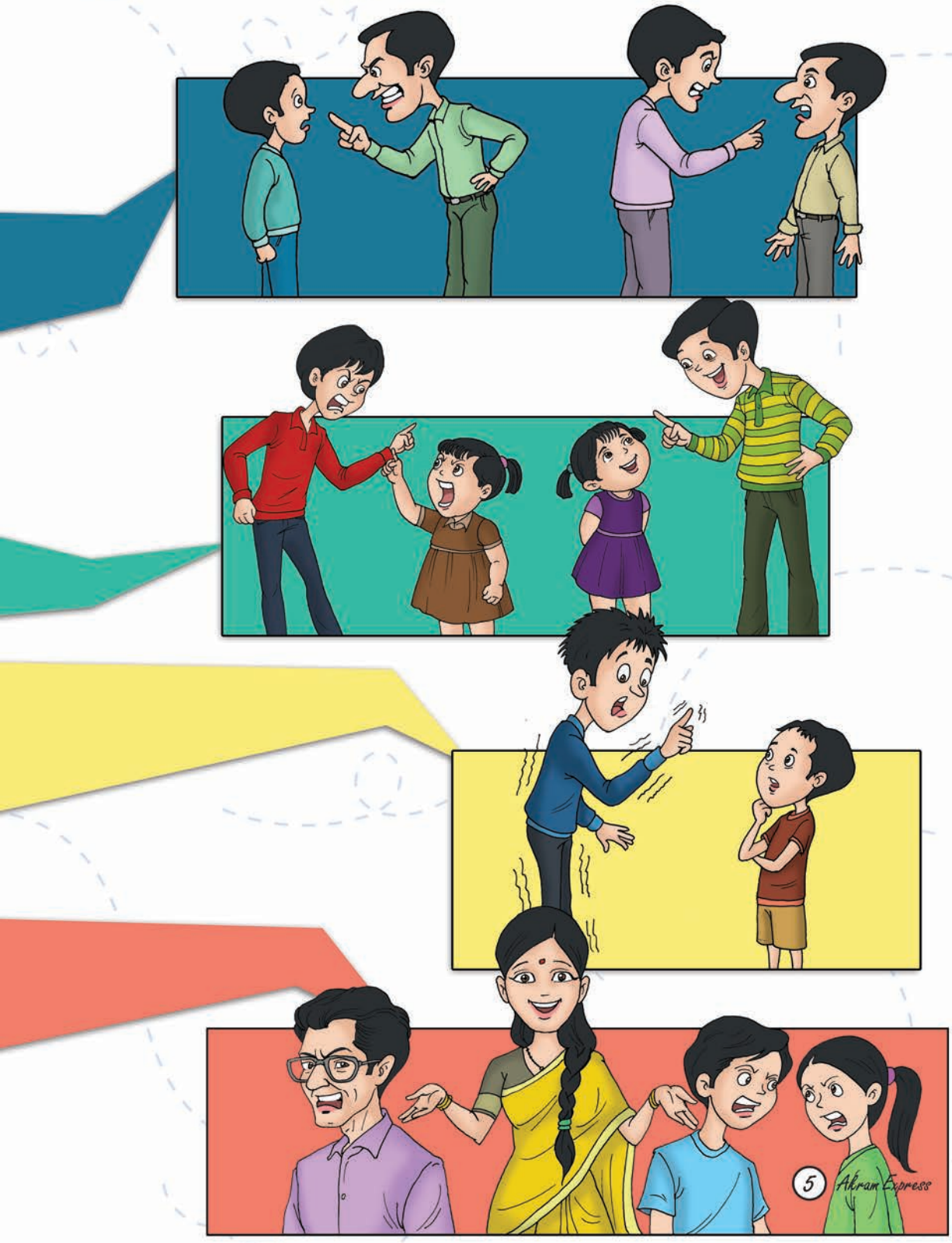
5
Akram Express

मोनोपॉली का गेम जमा हुआ था। नित्तल ने पासा फेंका। सिड एकटक पासे को देख रहा था। पासा स्थिर हुआ। नित्तल की कार 'फ्लीट स्ट्रीट' पर आई और गेम के रूल्स के अनुसार उसने वह जगह खरीद ली। यह देखकर सिड ने अपने हाथ पलंग पर इतने ज़ोर से पटके कि गेम का सेट-अप हिल गया। 'नो वे, यह प्रॉपर्टी मुझे चाहिए थी। तुम यह नहीं ले सकती।'

खेलते समय चिढ़ जाना, यह सिड के लिए कोई नई बात नहीं थी। युग ने सिड को शांत करते हुए कहा, 'रिलैक्स सिड, यह सब तो लक है, आज नित्तल का लकी डे है।' तभी डोरबेल बजी। उनका क्लासमेट चिराग था।

चॉक कलर्स चोरी हो गए

'सिड, मेरे चॉक कलर्स चोरी हो गए।' वह आते ही बोला पड़ा।

'ओह! आज ही जो तुम क्लास में नए लेकर आए थे, वे?' सिड को आश्चर्य हुआ।

'हाँ, वे ही।'

'लेकिन तुम्हें कैसे पता चला कि चोरी हो गए? तुम ही कहीं भूल गए होंगे तो?' सिड ने पूछा।

नित्तल और युग ध्यान से चिराग और सिड की बातें सुन रहे थे।

'मैं कहीं भूल नहीं गया हूँ। मुझे अच्छी तरह याद है कि ड्रॉइंग क्लास के बाद मैंने अपनी बैग में कलर रख दिए थे। घर जाकर देखा तो बैग में नहीं थे! और तुम्हें तो पता है कि वे कलर्स लंदन के थे। मुझे लगता है कि किसी ने ले लिए हैं। प्लीज़, कलर्स ढूँढ़ने में मेरी हेल्प करो।' चिराग ने विनती की।

सिड ने युग और नित्तल की तरफ देखा। दोनों ने सिर हिलाकर मौन स्वीकृति दी। पिछले साल तीनों ने मिलकर 'लन्च बॉक्स चोर' का पर्दाफाश किया था। और अब तीनों को एक नया रहस्य सुलझाने का मौका मिला है।

'ओके। चिराग, तुम्हें किसी पर शक है?' सिड ने डिटेक्टिव हैट पहन कर काम शुरू किया।

'हाँ, वह व्योम है न, वह मेरे पास बैठता है। और सुबह वह मेरे कलर्स को घूर-घूर कर देख रहा था।' चिराग ने कहा।

'नित्तल, नोट्स लिख रही हो न?' सिड ने पूछा।

नित्तल ने नोटबुक में देखते हुए ही 'हाँ' में सिर हिलाया।

'अच्छा, यह भी लिखो कि व्योम चिराग के बगल में बैठता है इसलिए उसके लिए कलर्स उठाना आसान था।' सिड ने कहा ।

उसके लिए कलर्स उठाना आसान था।

अरे भाई, इसमें क्या लिखना! यह तो समझने वाली बात है। नित्तल ने कहा।

सिड चिढ़ गया, 'मैं बड़ा हूँ या तुम?'

नित्तल ने मज़ाक में कहा, 'भैया, भूल गए क्या? हम ट्विन्स हैं।'

सिड चिढ़ गया, 'जो तुम्हें कहा है वह लिखो। इसमें आर्ग्युमेन्ट क्यों कर रही हो?'

नित्तल घबरा गई और उसने लिख लिया। युग ने हँसते हुए कहा, "इस केस के साथ हमें एक और कठिन केस सॉल्व करना है। मिस्टर सिड को गुस्सा क्यों आता है?"

यह सुनकर नित्तल हँसने लगी, इससे सिड को और ज्यादा गुस्सा आ गया, 'अगर तुम लोग मेरा मज़ाक उड़ाकर खुश होना चाहते हो तो करो ऐसा। मुझे तुम्हारे साथ काम नहीं करना है।'

'अरे सिड, गुस्सा मत हो। मैंने तो बस ऐसे ही कह दिया। सॉरी यार।

कठिन केस सॉल्व करना है।

चलो, हम कोई आइडिया सोचते हैं।' युग ने सिड को मनाते हुए कहा।

लेकिन सिड ने कोई जवाब नहीं दिया। गुस्सा होने के बाद सिड के पास सोचने की शक्ति ही कहाँ रहती थी। उसके अंदर ऐसी आग जलने लगती थी कि उसे आइडिया आने बंद हो जाते थे। वह ब्लैंक हो जाता था।

'चिराग, अपनी ड्रॉइंग बुक दिखाओ' युग ने कहा। चिराग ने ड्रॉइंग बुक निकालकर दी।

युग ने पहली ड्रॉइंग निकालकर पूछा, 'क्या यह ड्रॉइंग उन्हीं कलर्स से बनाई हुई है?'

चिराग ने गहरी साँस लेते हुए 'हाँ' कहा।

'इस ड्रॉइंग में से चॉकलेट की स्मेल क्यों आ रही है? क्या इस पर कुछ गिरा था?' युग ने पूछा।

चॉकलेट की स्मेल वाले कलर्स

'नहीं-नहीं, वे चॉकलेट की स्मेल वाले कलर्स हैं। अच्छे हैं न?' अपने क्रेयॉन्स की याद आते ही उसके चेहरे पर स्माइल आ गई।

सिड का गुस्सा शांत हो गया। उसने ड्रॉइंग को सूँघकर देखा और उसे एक आइडिया आया।

'फ्रेन्ड्स, कल के होमवर्क के लिए चोर ज़रूर उन कलर्स का इस्तेमाल करेगा। मैं सबकी ड्रॉइंग शीट्स कलेक्ट करने में टीचर की हेल्प करूँगा। सभी ड्रॉइंग को सूँघकर देखूँगा। कल चोर आसानी से पकड़ा जाएगा।' सिड ने आत्मविश्वास से कहा।

दूसरे दिन, प्लान के अनुसार सिड सबकी ड्रॉइंग शीट्स लेने लगा। आधी क्लास की शीट्स कलेक्ट हो गई थीं। लेकिन किसी की ड्रॉइंग से चॉकलेट की स्मेल नहीं आ रही थी। सिड का धैर्य टूटने लगा। उसको गुस्सा आने ही वाला था कि तभी उसे चॉकलेट की स्मेल आई। उसने दो-तीन बार ड्रॉइंग शीट स्मेल करके देखी। उसे विश्वास हो गया कि यह चिराग के कलर्स की ही स्मेल है। ड्रॉइंग शीट पर 'शिव' का नाम लिखा था।

ड्रॉइंग शीट स्मेल करके

क्लास खत्म होने पर सिड ने चिराग, नित्तल और युग को इकट्ठा करके कहा, 'चोर पकड़ा गया है। शिव के ड्रॉइंग में से चॉकलेट की स्मेल आ रही थी। स्कूल के बाद हम शिव को पकड़ लेंगे और उससे कलर्स लेंगे।'

चारों ने साइकिल स्टैंड के पास शिव को पकड़ लिया और उसके बैग में से कलर्स निकलवाए।

कलर्स का बॉक्स देखकर चिराग को गहरा धक्का लगा।

'तुमने मेरे कलर्स क्यों लिए? और यह क्या किया? तोड़ क्यों दिए?' चिराग ने उदासी भरी आवाज में कहा।

'मैंने कुछ नहीं किया और मुझे नहीं पता कि ये कलर्स तुम्हारे हैं। मुझे तो ये कल कचरा पेटी में से मिले।' शिव की आवाज में घबराहट थी।

'झूठ मत बोलो। एक तो चोरी की और ऊपर से झूठ बोलते हो!' सिड ने गुस्से में शिव का कॉलर पकड़ लिया।

'अरे सिड, दो मिनिट...' युग ने शिव को छुड़ाया 'शिव सच बोल रहा है। थोड़ा सोचो तो सही, यदि उसने सच में चिराग के बैग से क्रेयॉन्स लिए होते तो वह उन्हें तोड़ता ही क्यों? हम एक बार कचरा पेटी चेक कर लेते हैं।'

अब सिड को युग पर बहुत गुस्सा आया। उसे विश्वास था कि शिव ही

चोर पकड़ा गया है।

चोर है। वह पैर पटकता हुआ कचरा पेटी के पास गया। कचरा पेटी को खोलते ही वह स्तब्ध रह गया। अंदर चिराग के कलर्स के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े पड़े हुए थे। शिव निर्दोष है यह बात तो सबकी समझ में आ गई, लेकिन यह नहीं समझ में आ रहा था कि इतने अच्छे कलर्स को कचरा पेटी में कोई क्यों फेंकेगा।

कलर्स तोड़ क्यों दिए?

तभी एक कुत्ता जमीन चाटते हुए वहाँ आया।

'ओह, यह तो मोती की कारस्तानी लगती है!' कुत्ते को देखकर नित्तल ने कहा।

'हाँ, कल चिराग के बैग से कलर्स गिर गए होंगे। चॉकलेट की स्मेल आने के कारण मोती ने उस पैकिट को उठा लिया होगा और खाने की चीज़ समझकर कलर्स तोड़ दिए होंगे, फिर टूटे हुए कलर्स को पीअन अंकल ने कचरा पेटी में डाल दिया होगा।' युग ने पूरी पहेली सुलझा दी।

थोड़ी देर के लिए सभी चुप हो गए। फिर चिराग ने धीरे से कहा, 'सॉरी शिव। हमने तुम्हें भला-बुरा कहा।' टूटे हुए कलर्स का बॉक्स शिव के हाथ में रखते हुए उसने पूछा, 'यह कलर्स तुम रखोगे?'

एक मिस्टरी सॉल्व हो गई।

'हाँ, ओके।' कहकर शिव ने कलर्स का बॉक्स अपने बैग में रखा और वहाँ से चला गया। चिराग भी सभी को 'थैन्क यू' कहकर घर चला गया। कचरा पेटी में कलर्स के टुकड़े देखने के बाद सिड का मुँह तो जैसे सिल गया था। वह चुपचाप खड़ा था।

'एक मिस्टरी तो सॉल्व हो गई।' युग बोला।

'लेकिन और एक बाकी है।' नित्तल ने कहा।

'और कौनसी?' सिड ने पूछा।

'यही कि, मेरे सिड भैया को गुस्सा क्यों आता है?' नित्तल ने हँसते हुए कहा।

आमतौर पर इतने छोटे से मज़ाक में भी सिड को गुस्सा आ जाता था। लेकिन उस समय उसे इस बात का अफसोस था कि उसने गुस्से में आकर शिव का कॉलर पकड़ा जबकि बाद में वह खुद ही गलत साबित हुआ।

गुस्सा क्यों आता है?

नित्तल के सवाल के जवाब में उसने धीरे से कहा, 'क्यों आता है?'

'जब कोई तुम्हारी बात नहीं समझता या नहीं मानता अथवा तुम्हें जो करना है वह नहीं होता तब तुम तुरंत ही गुस्सा हो जाते हो।' नित्तल ने कहा।

'हं... हो सकता है। लेकिन कारण जानकर क्या करूँ? मुझे तो गुस्सा करना ही नहीं होता है। मुझे पता है कि मुझे जब गुस्सा आता है तब आइडिया आना बंद हो जाते हैं। मैं अंदर जलता रहता हूँ और आसपास के लोगों को भी हर्ट कर देता हूँ।' लेकिन गुस्सा करना कैसे छोड़ूँ?' सिड को सचमुच में इसका सोल्यूशन चाहिए था।

'तुम्हारे गुस्से का सोल्यूशन मुझे यू-ट्यूब से मिला है।' युग ऐसे बोला जैसे उसने पहले से ही जवाब सोच रखा हो। 'लास्ट सन्डे मैं अपनी बहन के साथ यू-ट्यूब पर कुछ विज्ञान के प्रयोग देख रहा था। एक प्रयोग में पानी में कैल्शियम डालकर रिज़ल्ट नोट करना था। गलती से कैल्शियम की जगह पानी में सोडियम का टुकड़ा डाल दिया और बहुत बड़ा धमाका हुआ।' इतना कहकर युग रूक गया।

'तुम कहना क्या चाहते हो?' सिड ने पूछा।

कारण नहीं होता तो धमाका भी नहीं होता।

"यही कि सोडियम के कारण पानी में धमाका हुआ। यदि कारण नहीं होता तो धमाका भी नहीं होता। उसी तरह यदि तुम भी अपने कारण जैसे कि 'सब मेरे कहे अनुसार ही होना चाहिए या यह कि सबको तुम्हारी बात समझनी ही चाहिए', यह सब निकाल दोगे, तो तुम्हारे अंदर भी कोई धमाका नहीं होगा। यानी कि तुम्हें भी गुस्सा नहीं आएगा।" युग ने अपना लॉजिक समझाया।

युग की बात सिड के गले के नीचे उतर गई। घर पहुँचने पर भी उसके मन में युग की कही बातें ही घूम रही थीं। उसी समय मम्मी के फोन पर किसी का फोन आया। फोन पर बात खत्म होने पर सिड की मम्मी उसके रूम में आईं और उसे न्यूज़ सुनाए। वे क्या न्यूज़ थे? कोई नई पहेली सुलझाने का मौका या फिर कुछ और? क्या क्रोध के कारण जानकर सिड का क्रोध शांत हो गया होगा? इन सब पहेलियों का हल मिलेगा आने वाले अंक में...

मीठी यादें

उस साल मेरी गुरु पूर्णिमा में जाने की बहुत इच्छा थी। लेकिन संयोग ऐसे थे कि मुझे पता नहीं था कि मैं जा पाऊँगी या नहीं। मैंने नीरू माँ से बात की तब उन्होंने मुझे लगभग तीन बार कहा, 'तुम गुरु पूर्णिमा में जाने का भाव रखना।' उस समय मैंने पहली बार 'भाव रखने' की बात सीखी थी। नीरू माँ ने कहा था इसलिए मैंने गुरु पूर्णिमा में जाने का भाव रखा।

लगभग छः महीने पहले ही मैंने नई जॉब शुरू की थी। इसलिए छुट्टी मिलना बहुत मुश्किल था। मैंने अपने सुपरवाइज़र से छुट्टी के लिए बात की। लेकिन उस समय के दौरान उन्हें भी छुट्टी पर जाना था। इसलिए मुझे लगा कि अब तो मुझे छुट्टी मिलेगी ही नहीं। गुरु पूर्णिमा का समय पास आ रहा था। संयोग से उसी समय हमारी कंपनी के डायरेक्टर को छुट्टी लेनी पड़ी। और इस कारण मेरे सुपरवाइज़र छुट्टी नहीं ले पाए। मेरी छुट्टी मंजूर हो गई और मुझे गुरु पूर्णिमा में जाने का मौका मिल गया।

नीरू माँ की कही हुई बात का दिल से पालन किया तो जो असंभव लग रहा था वह भी संभव हो गया!

उस वर्ष गुरु पूर्णिमा के दिन जो हुआ वह मेरे लिए यादगार बन गया। उस दिन मैं अच्छे से नाश्ता करके गुरु पूर्णिमा के स्थल पर पहुँची। पूरा हॉल महात्माओं से भर गया था। थोड़ी जगह मिली, मैं वहाँ खड़ी हो गई। अचानक, मेरा हृदय बहुत हल्का हो गया और मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।

फिर मैंने जो द्रश्य देखा वह इतना अद्‌भुत था कि मैंने मेरी जिदंगी में पहले ऐसा कभी नहीं देखा था। पूज्य नीरू माँ हर एक महात्मा को एक फूल देकर, झुककर महात्माओं से आशीर्वाद ले रही थीं। जब मेरी बारी आई, तब नीरू माँ मेरे सामने भी झुकीं और मुझे फूल दिया। मेरी आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे। हॉल के छोर पर एक छोटा बच्चा सो रहा था, नीरू माँ ने वहाँ जाकर उस बालक को भी प्रणाम किया।

मैंने कभी भी किसी अध्यात्मिक गुरु को शिष्य के सामने झुकते हुए नहीं देखा था। उस दिन मुझे नीरू माँ के गज़ब के दर्शन हुए। बाद में मुझे पता चला कि उस दिन नीरू माँ का तीसवाँ ज्ञान दिवस था।

पूरे जगत् में ऐसे प्रेममय मूर्ति आत्मज्ञानी देखने को नहीं मिलेंगे, जो अपने शिष्यों के आगे भी झुक सकते हों!

टॉयलैन्ड

'टॉय ऐन्ड जॉय' चॉकलेट शॉप में यमी-यमी कैरमल चॉक्लेट्स आई हैं।
हाँ, लेकिन अभी हम नहीं जा सकते। भूल गए, हमें बुक शॉप जाना है? लेट हो रहा है।
सोफिया पास में ही खड़ी थी। उसे दोनों की बातें सुनाई दी।
हं!? तुम बुक शॉप आ रही हो?
तुम लोग बुक शॉप पहुँचो। मैं हम तीनों के लिए चॉकलेट्स लेकर फटाफट आती हूँ।
और नहीं तो क्या! हम तीनों को हर जगह साथ ही जाना चाहिए न।

सोफिया चॉकलेट शॉप की तरफ दौड़ी। रास्ते में...
ऐ सोफिया, मुझे धक्का क्यों मारा?
क्योंकि, मेरे पास तुम्हारे जैसे कछुओं से बात करने का टाइम नहीं है।
चॉकलेट शॉप के बाहर कुछ मिनियन्स एक पज़ल बना रहे थे।
क्या बीच रास्ते में बैठे हो? अक्ल नहीं है?
सोफिया, तुम जल्दी में हो तो हम पर गुस्सा क्यों कर रही हो?
कोई जवाब दिए बिना वह शॉप के अंदर दौड़ती हुई गई। चॉकलेट्स लेकर वह पैसे देने के लिए लाइन में खड़ी हो गई।
जाओ चिम्पु, तुम्हारी बारी है। तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा? मिस्टर लेगो तुम्हें बुला रहे हैं।
सॉरी सोफिया, कल ही मेरे आँख के बटन टूट गए। इसलिए मुझे सचमुच दिखाई नहीं दे रहा।
13
Akruti Express

सोफिया की बारी आई।
सोफी, चिम्पु को तो सच में दिखाई नहीं दे रहा, लेकिन गुस्सा हमें इतना अँधा बना देता है कि जो बात सही है वह भी देखने नहीं देता।
ओह, हाँ... थैन्क यू मिस्टर लेगो, मैं ध्यान रखूँगी।
अभी मेरे पास मिस्टर लेगो की बात सुनने का टाइम नहीं है।
कहाँ जा रहे हो? मैं हम सब के लिए चॉकलेट्स लाई हूँ।
थैन्क यू सोफिया। हमें अभी घर जाना है। हम तुमसे बाद में मिलते हैं।
मैं उनके लिए इतना कुछ करती हूँ और उन्हें मेरी कदर ही नहीं है!
वे क्या समझते हैं? मुझे इग्नोर करते हैं तो अब से मैं भी उनके साथ फ्रेन्डशिप नहीं रखूँगी।
अगले दिन,
हाय सोफिया। चलो, हमारे साथ बुक शॉप चल रही हो? बहुत अच्छी बुक्स आई हैं।
नहीं, मुझे तुम लोगों के साथ कहीं नहीं जाना। तुम जाओ।
14 January 2024

कुछ देर बाद सोफिया अकेली बुक शॉप पर गई।
हैपी बर्थ डे टू यू!

थैन्क यू! तुम लोगों को याद था!?
याद तो होगा न! इतने दिनों से हम तुम्हारी सरप्राइज़ पार्टी की तैयार कर रहे थे।

और मुझे लगा कि तुम लोगों ने मुझे अकेला कर दिया। मैं गुस्सा हो गई और फ्रेन्डशिप तोड़ डाली।
अरे सोफी, इतना गलत सोचने से पहले हमारे साथ बात कर ली होती तो!

सॉरी। अब से कभी भी गुस्से में कोई भी बात नहीं सोचूँगी। सच में, गुस्सा हमें इतना अँधा बना देता है कि सही बात देखने ही नहीं देता।
15

Solve the Problem

सौर मंडल के ग्रहों को उनके टीचर सूरज सर ने नक्षत्र के तारों की डिज़ाइन बनाने का एक मुश्किल प्रॉब्लम दिया था। आठों ग्रहों को दो-दो के पेर में रहकर यह प्रॉब्लम सॉल्व करना था।

प्रॉब्लम देखकर बुध को तो चक्कर ही आ गए। उसे प्रॉब्लम समझ में नहीं आ रहा था। उसी समय गुरु उससे कुछ पूछने आया। बुध ने उसे वहाँ से निकाल दिया, 'तुम मेरा दिमाग मत खाओ। तुम्हारा पार्टनर तो शनि है न! उसे जाकर पूछो।'

बुध के पार्टनर शुक्र ने बुध को प्रॉब्लम समझाने की बहुत कोशिश की। अंत में वह परेशान हो गया, 'मैं खुद ही सॉल्व कर लेता हूँ। मैं तो थक गया तुम्हें समझाते-समझाते।'

पृथ्वी और मंगल की जोड़ी ने साथ मिलकर प्रॉब्लम सॉल्व कर दिया। पृथ्वी का नन्हा फ्रेन्ड प्लूटो जब पृथ्वी के साथ खेलने आया तब शनि ने पृथ्वी का मज़ाक उड़ाते हुए कहा कि 'पृथ्वी, तुम तो लूज़र हो। तुम्हें फ्रेन्ड्स बनाना नहीं आता? प्लूटो तो ग्रह भी नहीं है और उसे साथ लेकर घूमती रहती हो।'

प्लूटो ने पृथ्वी से कहा, 'पृथ्वी, तुम तो कितनी स्ट्रोंग हो। तुम चाहो तो शनि को सही रास्ते पर ला सकती हो। फिर भी तुम क्यों उसके मज़ाक का जवाब नहीं दे रही हो और हमेशा मुझे ही प्रोटेक्ट करती हो?'

'क्योंकि जो सच में स्ट्रोंग होता है वह कभी दूसरों को दुःख नहीं देता।' पृथ्वी ने कहा।

गुरु और शनि की जोड़ी ने जवाब ढूँढ़ लिया। जब गुरु ने डिज़ाइन ड्रॉ करने के लिए स्टार-ब्लू पेन्सिल अपने हाथ में ली तो शनि ने उसके हाथ से पेन्सिल छीनते हुए कहा, 'तुम्हें कितनी बार कहा है कि तुम बकवास ड्रॉइंग करते हो, तुमने हाथ में पेन्सिल क्यों ली? मुझे दो, मैं करूँगा।'

युरेनस और नेप्चून ने टीमवर्क के द्वारा, एक-दूसरे का व्यू पॉइन्ट समझकर प्रॉब्लम सॉल्व कर दिया।

ग्रहों का प्रॉब्लम तो सॉल्व हो गया। चलो, अब हम एक प्रॉब्लम सॉल्व करते हैं। ऊपर के प्रसंग में कुछ ग्रहों को किन्हीं कारणों से गुस्सा आया था। नीचे के टेबल में जो कारण बताए गए हैं उसके सामने योग्य ग्रह का नाम लिखो और उसका चित्र बनाओ।

गुस्से का कारण

हमारे कहे अनुसार नहीं होता हो

- ग्रह का नाम और चित्र

गुस्से का कारण

सामने वाला हमारी बात नहीं समझे

ग्रह का नाम और चित्र

गुस्से का कारण

जब खुद को समझ में नहीं आता हो

ग्रह का नाम और चित्र

दादाश्री कहते हैं कि शक्ति होने के बावजूद भी जो सामने वाले को दुःख नहीं दे वह बलवान कहलाता है।

इस प्रसंग में किस ग्रह ने बलवानपना दिखाया?

ग्रह का नाम और चित्र

मनपसंद कहानी

पूज्यश्री, मेरी फ्रेन्ड्स मेरी दो चोटियों का मज़ाक उड़ा रही थीं।
ऐसा ?

हाँ। मुझे कहती हैं कि मेरी चोटियाँ फाउन्टेन जैसी लगती हैं। मुझे बहुत गुस्सा आया।

लेकिन, तुम तो दादा की स्ट्रोंग गर्ल हो न?
हाँ।

तो जो स्ट्रोंग होते हैं उन्हें कभी भी गुस्सा नहीं आता।

और अगर आए तो?
तो यह पवित्रा लो और जब भी गुस्सा आए तब मुझे याद करना। गुस्सा छूमंतर हो जाएगा।

चलो खेलें...

दिए गए इमोजी में से हैप्पी वाले इमोजी ढूंढ़कर उसमें पीला कलर भरें।

Akram Express

January 2024
Year : 11, Issue : 10
Conti. Issue No.: 130

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

Aankho Michi Hath Jodi ...

Scan this QR code to watch an animated video about prayers.

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on Behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhtral-Pratappura Road,
At-Chhatral, Tal. Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.